सत्यांश

सोनपुर के विश्वप्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र मेला में इस बार 19 नवंबर को पहली बार जाना हुआ। पहले से सुन ही रखा था कि यह एशिया का सबसे बड़ा मेला विशेषकर पशु-मेला है। गज-ग्राह यानी हाथी-घड़ियाल की लड़ाई के अंतिम पड़ाव होने एवं गज की रक्षा हेतु भगवान विष्णु के अवतरित होने का पुण्य-स्थान होने के कारण यह एक महान् तीर्थस्थल भी है। गंगा एवं गंडक नदियों के संप्रवाह तट पर यह अवस्थित है। प्रति वर्ष कार्तिक मास की पूर्णिमा तिथि को इस मेले का शुभारंभ होता है, जो आगे लगभग एक महीना तक चलता है। यह कब से चल रहा है, इसका ठीक-ठीक अनुमान कठिन है। लेकिन प्राचीन काल से लेकर अब तक राजा-महाराजाओं के लिए अच्छी नस्ल के घोड़े, हाथी, ऊँट की आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ जनसामान्य की जरूरतों को एक स्थान पर उपलब्ध कराने के निमित्त यह विविधतापूर्ण और विशालकाय रूप धारण करते गया है। तब न संचार व्यवस्था तीव्र थी और न परिवहन के साधन सुगम थे। फलतः ऐसे आयोजनों का इंतजार महीनों से होता था। समय बीतने के साथ-साथ मेले का स्वरूप बदलता गया, फिर भी उसकी रौनक नए रूप में विद्यमान है।

हरिहरनाथ यानी विष्णु एवं शिव का ऐतिहासिक मंदिर यहाँ स्थित है। मान्यता है कि सीता स्वयंवर के लिए जनकपुर जाते समय श्रीराम ने इसकी आदि रूप में प्राण प्रतिष्ठा करायी थी। इसे बाद के राजाओं ने आधुनिक रूप दिया है। गज-ग्राह की लड़ाई में गज द्वारा भगवान विष्णु को कमल अर्पित करती हुई प्रतिमा भी यहाँ बनी है। राजा इन्द्रदयुम्न और राजा हूहू मुनिगणों के शाप से हाथी और घड़ियाल बन गए थे। एक बार दोनों में भयंकर युद्ध हुआ जो बरसों तक चला। वे दोनों लड़ते-लड़ते वर्तमान मंदिर के समीप आ गए। हाथी स्वयं को थका व कमजोर पड़ते देखकर भगवान विष्णु से रक्षा की गुहार लगायी, फलतः भगवान ने प्रकट होकर ग्राह को चक्र से मार दिया; परंतु घड़ियाल विष्णु के सान्निध्य में शापमुक्त हो गया। इसी प्रकार हाथी को भी शापमुक्त कर दिया। इसी कारण इसे विशिष्ट तीर्थस्थान का दर्जा प्राप्त है। एक महीना के मेले की बात छोड़ दी जाए, तब भी वर्ष भर यहाँ आने वालों का ताँता लगा रहता है। यह पटना-हाजीपुर-छपरा मार्ग के किनारे स्थित है। पूरे सात-आठ घंटे में करीब-करीब पूरा मेला कई-कई बार घूमा-देखा। मेला करीब 6-7 किलोमीटर में लगता है, जहाँ हर तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामान, पशु, चिड़िया, पेड़-पौधों, दर्शकों-ग्राहकों के लिए उपलब्ध रहते हैं। मेले में पूर्वाहन में ही पहुँच जाने पर भीड़ बहुत कम दिखी। तभी छिटपुट लोगों के बीच पूरे मेला परिसर को एक बार घूम लिया। तब लगा कि जैसा सुना था, वैसा कुछ नहीं है, लेकिन बारह-एक बजे के बाद सारी दुकानें खुल गईं। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, लोगों का जमावड़ा बढ़ता गया। पुनः मेले में घूमना हुआ। ज्यादा कुछ न खरीद कर तेरह पेड़ - स्टीविया, साबूदाना, शरीफा, नारंगी, अमरूद, नारियल, अनार, तेजपत्ता, गरम मसाला, कसैली, नाशपाती, अंगूर के ले लिए। कपड़ा, फर्नीचर, हाथी-घोड़े, भैंस-गाय से लेकर हथियार, कृषि-मशीनें सब बिक रही थीं। ऐसे मेलों का फायदा यही होता है कि एक स्थान पर अधिकतर सामान मिल जाते हैं। समय के साथ बहुत विकास हुआ है, हाथी-घोड़ों की पंक्ति के साथ उनके मालिकों की चारपहिए वाली बड़ी गाड़ियाँ बगल में खड़ी थीं, वहीं परम्परागत रूप से बच्चों के लिए बिकने वाले मिट्टी के खिलौने भी कुछ बच्चों द्वारा बेचा जा रहा था। यह दृश्य बयान कर रहा था कि अब हाथी वालों के भी लिए गाड़ी अपरिहार्य हो गई है, वहीं महँगे इलेक्ट्रॉनिक खिलौने की चकाचौंध में आज भी मिट्टी के खिलौने को बेचकर चंद पैसे कमाकर गुजारा करने वाले लोग हैं और उन्हीं मिट्टी के खिलौने से खेलकर मन बहलाने वाले बच्चे भी। विषमता का यह अन्याय देखकर बचपन के दिन याद आने लगे कि कैसे उन मिट्टी के खिलौने के लिए भी मेला जानेवालों से बच्चों को करार-तकरार करना पड़ता था। ऐसे मेले में कहीं-कहीं पहले देखे लोग भी मिलते हैं, जिनसे न परिचय की फुर्सत होती है और न जरूरत और न साहस ही। इन सबके साथ साफ-सफाई और सुरक्षा व्यवस्था में काफी खामी नजर आई। मेले की प्रसिद्धि और आगन्तुकों की भीड़ को देखते हुए इस दिशा में व्यापक व सुदृढ़ प्रबंध किए जाने की आवश्यकता है।

सोनपुर जाते समय परसा से शीतलपुर तक सड़क पूरी तरह उखड़ी हुई मिली। चौड़ीकरण के साथ इस सड़क के दो-तीन साल पहले बनने की सूचना तो मिलती है, लेकिन वर्तमान स्थिति इसके इतिहास के उलट साक्ष्य देती है। दरियापुर में पूर्व रेलमंत्री लालू प्रसाद के प्रयास से रेलपहिया के निर्माण का कारखाना बन कर चालू हो गया है, फलतः रेलवे विभाग ने अपनी आवाजाही के लिए समानांतर सड़कें बनाई हैं, जो पहले अच्छी थीं, अब टूट-फूट गई हैं। पता चला कि सारे निजी-सार्वजनिक वाहन रेलवे द्वारा बनाए इसी रास्ते से चलाये जाने लगे। आखिर रेलवे ने लोहे का मजबूत बैरिकेड लगाकर बस, ट्रक को निषिद्ध कर दिया है, परंतु यह कदम सड़क के जर्जर होने के बाद उठाया गया है। आखिरकार किसी अच्छी सड़क पर चलने, वाहन चलाने से किसी को कैसे वंचित किया जा सकता है, हालाँकि कई बार ऐसा होता है। रेल-पहिया कारखाना के कारण स्थानीय सड़कों के निर्माण के साथ ही कारखाने के परिसर में चौबीसों घंटे बिजली रहती है। इन सबके बावजूद स्थानीय व आस-पास के लोगों को कितना रोजगार का अवसर उपलब्ध हुआ है और उनके जीवन-स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा है, यह सवाल महत्त्वपूर्ण है।

नवंबर में ही दिल्ली के प्रगति मैदान में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला लगता है, जहाँ की आबोहवा सोनपुर मेले से बिल्कुल भिन्न होती है। यहीं हर वर्ष विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली पुस्तक मेला के अतिरिक्त कई तरह मेले लगते रहते हैं। व्यापार और पुस्तक मेला तो दर्जनों बार घूमा है और अनेक ऐसी किताबों व सामानों का क्रय किया है, जो आज भी अपनी यूनिक पहचान रखते हैं। इस बार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले की जगह सोनपुर मेले में घूमने से जो संतुष्टि मिली है, वह अलहदा है, उस पर भी तब, जब तेरह पौधों के सिवा सुई तक की खरीद नहीं की। पहली बार उसे-घूमने का सुकून जो है।